विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

अनुवाद: महत्व और चुनौतियां

सन् 2022 में जब हिंदी लेखिका गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेज़ी अनुवाद 'टूम्ब ऑफ सैण्ड' को अत्यंत प्रतिष्ठित इण्टरनेशनल बुकर प्राइज़ मिला तो बहुतों का ध्यान इस बात की तरफ गया कि अनुवादक की भी कोई महत्ता होती है। इंटरनेशनल बुकरप्राइज़ की राशि पचास हज़ार पाउण्ड थी जो दोनों में आधी–आधी बांटी गई अर्थात गीतांजलि श्री और डेज़ीरॉकवेल को पच्चीस पच्चीस हज़ार पाउण्ड (भारतीय मुद्रा में लगभग पच्चीस लाख रुपये प्रत्येक को) मिले। बहुतों ने तब पहली दफा इस अनुवादिका डेज़ीरॉकवेल का नाम सुना था, हालांकि डेज़ी इससे पहले ही अनेक भारतीय कृतियों का अनुवाद कर चुकी और एक अनुवादक के रूप में स्थापित हो चुकी थी। असल में बहुत कम लोग होते हैं जो किसी अन्य भाषा की कृति को अपनी भाषा में अनुवाद के माध्यम से पढ़ते हुए इस बात पर ध्यान दे पाते हैं कि अनुवाद किसने किया है। यहां तक कि बहुत सारे प्रकाशक भी अनुवादक को समुचित महत्व नहीं देते हैं। बहुत बार तो वे अनुवादक का नाम तक ज़ाहिर नहीं करते हैं। ऐसे में जब डेज़ीरॉकवेल का नाम और उन्हें मिलने वाली विपुल धन राशि की चर्चा हुई तो स्वाभाविक ही था कि लोगों को महसूस हुआ कि अनुवादक कर्म की भी कोई महत्ता है।

डेज़ीरॉकवेल अमरीका में जन्मी अनुवादक है। लेकिन हमारे यहां उनकी ज़्यादा चर्चा इस कारण हुई कि उन्होंने एक भारतीय कृति का अनुवाद किया था। अब इस बरस अर्थात 2025 में एक भारतीय अनुवादक को भी यही सम्मान मिला है। दीपा भस्थी पहली भारतीय अनुवादक हैं जिन्हें कन्नड लेखिका बानू मुश्ताक़ के कहानी संग्रह हार्ट लैम्प के अनुवाद के लिए लेखिका के साथ–साथ पुरस्कृत किया जाने की घोषणा हुई है। इन दो अनुवादकों – डेज़ीरॉकवेल और दीपा भस्थी को इतनी बड़ी राशि का प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने के बाद हममें से बहुतों का ध्यान अनुवाद कर्म की तरफ गया है। वैसे, यह ध्यान जाने से पहले भी हम विभिन्न अनुवादकों के अनुवाद कर्म से लाभान्वित होते रहे हैं। हम में से बहुतों ने संस्कृत के अनेक महान ग्रंथों को अनुवाद के रूप में ही पढ़ा है, मुझ जैसे हिंदी भाषा भाषियों का अनेक विदेशी लेखकों जैसे चेखव, गोगोल, मोपासां, ओ हेनरी, मार्क ट्वेन, डीएच लॉरेंस, पर्ल एस बक जैसे महान लेखकों के सृजन से प्रथम परिचय अनुवाद के माध्यम से ही हुआ। रांगेय राघव और हरिवंश राय बच्चन के अनुवादों के माध्यम से शेक्सपियर के रचनाकर्म से सम्पर्क हुआ। हम लोगों ने बांग्ला के रचनाकारों जैसे शरत, बंकिम, ताराशंकरबंद्योपाध्याय, आशापूर्णा देवी, शंकर आदि को अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ा है। अलबत्ता उर्दू के साहित्य को हम लिप्यंतर के माध्यम से पढ़ते रहे हैं। इन दोनों में अंतर है। लिप्यंतर में जहां भाषा वही रहती है, केवल लिपि बदलती है, अनुवाद में पूरी की पूरी भाषा ही बदल जाती है। आज जब भारतीय भाषाओं से हमारा परिचय बढ़ता जा रहा है तो उसमें सबसे बड़ी भूमिका अनुवाद की ही है। लेकिन अगर हम कुछ अच्छे अनुवादकों के नाम याद करना चाहेंगे तो हमें बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा। इसलिए कि हम इस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं कि किसके श्रम के कारण हम किसी अनजानी भाषा के साहित्य का आस्वाद ले पा रहे हैं।

इस बात को समझा जाना ज़रूरी है कि सांस्कृतिक आदान प्रदान के लिए अनुवाद बहुत आवश्यक है। साहित्य, कला और प्रादेशिक परंपराओं को दूसरी भाषा के जानने वालों तक पहुंचाने में अनुवाद कर्म की भूमिका असंदिग्ध है। अनुवाद का जितना सांस्कृतिक महत्व है उससे कम महत्व उसका ज्ञान के प्रसार में नहीं है। विज्ञान, तकनीक,चिकित्सा, शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक–दार्शनिक आदि चिंतन को अनुवाद ही बहु संख्यक समाज तक पहुंचाता है। अगर जर्मन या फ्रेंच में किसी भी क्षेत्र में कुछ अच्छा काम हुआ है तो बिना उस भाषा को जाने हम अंग्रेज़ी के माध्यम से उसका लाभ लेते हैं। अब तो विश्व का बहुत सारा ज्ञान (और विज्ञान भी) हिंदी सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से आ रहा है। इसी तरह संचार और व्यापार में भी अनुवाद की महती भूमिका है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों का निर्वहन अनुवाद के माध्यम से ही हो पाता है। यही बात विभिन्न देशों के मध्य व्यापार के लिए भी सच है। शिक्षा और साहित्य में अनुवाद की उपादेयता के बारे में तो कुछ भी कहना अनावश्यक है। साहित्य में अनुवाद की महत्ता के कुछ उदाहरण तो मैंने दिये ही हैं, शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद इतना ज़रूरी है कि अगर वह न हो तो शिक्षा का पूरा ढांचा ही चरमरा जाएगा। अनुवाद की एक और उपादेयता भाषाओं के प्रसार और उनके संरक्षण में भी है। जब हम किसी भाषा से अनूदित कोई कृति पढ़ते हैं और वह हमें अच्छी लगती है तो स्वभावत: हम उस भाषा को सीखने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। जब ऐसा होता है तो उन भाषाओं को, जो लुप्त होने के कगार पर है, काफी संबल मिलता है।

भारत एक बहु भाषा भाषी देश है। हमारे यहां 22 तो अनुसूचित भाषाएं हैं ही, हज़ारों बोलियां हैं। इन सबके बीच आदान-प्रदान के लिए अनुवाद की महता असंदिग्ध है। लेकिन हम पाते हैं कि कुछेक भाषाओं को छोड़कर शेष अधिकांश भाषाओं में अभी पर्याप्त अनुवाद नहीं हो रहे हैं। इसके पीछे सक्षम अनुवादकों की कमी के साथ-साथ इसका वाणिज्यिक पक्ष भी है।

अगर हम अनुवाद के संदर्भ में भारत की बात करें तो हम पाते हैं कि हमारे यहां अनुवाद की परंपरा बहुत पुरानी है, भले ही तब आधुनिक अनुवाद की अवधारणा न रही हो। हमारे भक्ति साहित्य का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद पाया जाता है। आधुनिक काल में तो अनुवाद कर्म को गंभीरता से लिया ही जाने लगा है। शैक्षिक व अकादमिक क्षेत्रों में अनुवाद ने बहुत महत्वपूर्ण योग दिया है। पाठ्य पुस्तकों का अनुवाद एक व्यावहारिक ज़रूरत थी और है। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद खूब हुए हैं। साहित्य अकादमी और नेशनल बुक ट्रस्ट जैसे संस्थानों ने अनुवाद के काम को गति देने में सक्रिय भूमिका अदा की है। जहां तक तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद का सवाल है, केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने तकनीकी शब्दावली का विकास करके और उसे निरंतर समृद्ध एवं अद्यतन करने के सुनियोजित प्रयास करके इस काम को सुगम बनाया है। नेशनल ट्रांसलेशन मिशन की भूमिका भी सराहनीय है। इधर मीडिया और मनोरंजन की दुनिया में अनुवाद कर्म नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। विभिन्न प्रकाशन एकाधिक भाषाओं में प्रकाशित होने लगे हैं जिनमें बहुत सारी सामग्री अनूदित होती है। फ़िल्मों आदि में विदेशी फिल्मों के डब किए हुए संस्करण और अन्य भाषाओं के अपनी भाषा में सब टाइटल्स अनुवाद की उपादेयता को रेखांकित करते हैं।

भारत एक बहु भाषा भाषी देश है। हमारे यहां 22 तो अनुसूचित भाषाएं हैं ही, हज़ारों बोलियां हैं। इन सबके बीच आदान–प्रदान के लिए अनुवाद की महता असंदिग्ध है। लेकिन हम पाते हैं कि कुछेक भाषाओं को छोड़कर शेष अधिकांश भाषाओं में अभी पर्याप्त अनुवाद नहीं हो रहे हैं। इसके पीछे सक्षम अनुवादकों की कमी के साथ–साथ इसका वाणिज्यिक पक्ष भी है। बोलने वालों की संख्या के आधार पर बहुत छोटी भाषाओ और बोलियों में अनुवाद करना अभी आर्थिक रूप से घाटे का सौदा माना जाता है। इसके अलावा, बोलियों की बहुत सारी अभिव्यक्तियों को किसी अन्य भाषा या बोली में अनुवाद करना आसान नहीं होता है।

इधर अनुवाद की दुनिया में बहुत बड़ी हलचल मशीनी अनुवाद और अनुवाद के काम में कृत्रिम मेधा (एआई) के प्रवेश से हो रही है। ऊपरी तौर देखने से लग सकता है कि इनके कारण अनुवादक तो बेरोज़गार ही हो जाएगा। लोग़ कल्पना करते हैं कि मशीन किसी आटा चक्की की तरह से काम करेगी और आप इधर से स्त्रोत भाषा की सामग्री डालेंगे और उधर से लक्ष्य भाषा में उसका अनुवाद बाहर निकल आएगा। यह मिथ्या धारणा है। बेशक मशीनी अनुवाद और एआई ने अनुवाद की बहुत सारी मुश्क़िलों को हल किया है, भाषा और अभिव्यक्तियों की बारीकियों को पकड़ना उनके लिए नामुमकिन ही कहा जाएगा। इसलिए बावज़ूद सारी तकनीकी प्रगति के मनुष्य की, समर्थ अनुवादक की ज़रूरत सदा रहेगी।

भारत में अभी भी अनुवाद कर्म को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। अनुवादक को न तो समुचित श्रेय मिलता है और न सम्मानजनक मानदेय। इस बात को समझा ही नहीं गया है कि अनुवाद करना मूल लेखन करने जितना ही, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा कठिन और श्रमसाध्य है। एक तरह से तो अनुवाद पुन: सृजन ही होता है, अत: अनुवादक को समुचित श्रेय औरमानदेय मिलना चाहिए, तभी बेहतर अनुवाद मिल सकेगा। इधर अनेक संस्थान ऐसा करने लगे हैं, यह शुभ है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

चुनौतियों के मध्य विधानसभा

डॉ. कैलाश सोडाणी

29 मई, 2025 को हमारे वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के तत्वावधान में "विधानसभा –कल, आज और कल" विषय पर विधानसभा अध्यक्ष समागम के अंतर्गत विधानसभा की कार्य प्रणाली पर अच्छा मंथन हुआ। संगोष्ठी में वर्तमान अध्यक्ष, विधानसभा प्रो. वासुदेव देवनानी के साथ–साथ पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, कैलाश मेघवाल एवं प्रो. सी.पी. जोशी ने बताया कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था में विधानसभा सबसे सशक्त, जीवन्त और उत्तरदायी विधायी संस्था है। प्रजातंत्र की आधारशिला ही विधानसभा एवं लोकसभा हैं। इनकी मजबूती एवं वर्चस्व आम जनता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सौभाग्य से यह समागम राज्यपाल हरिभाऊ बागडे के मुख्य आतिथ्य में हुआ, जो महाराष्ट्र विधासभा के अध्यक्ष भी रहे हैं। उन्होंने कहा कि विधानसभा केवल कानून बनाने वाली संस्था ही नहीं है, अपितु कार्यपालिका पर नियंत्रण रखती है, नीतियों पर चर्चा करती है और जन समस्याओं को आवाज प्रदान करती है। भारतीय संसदीय लोकतंत्र की जड़े मजबूत हैं, लेकिन इसकी मर्यादाओं में नि:संदेह कुछ गिरावट आई है। इन सभी के मध्य हमारे संस्कार एवं संस्कृति इतनी समृद्ध हैं कि संसदीय लोकतंत्र की गरिमा एवं भविष्य दोनों सुरक्षित हैं। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्षगण सदैव इस संस्था के गरिमामय संचालन और लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा में अग्रणी रहे हैं। सभी अध्यक्षों ने संसदीय परम्पराओं को मजबूत करने, सदन की कार्यक्षमता और लोक सहभागिता को बढ़ाने के लिए अनेक उल्लेखनीय कदम उठाये हैं।

यह सकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि राजस्थान विधानसभा में सूचना औद्योगिकी का उपयोग तेजी से बढ़ा है। ई–विधान प्रणाली को अपना कर कागज रहित कार्य प्रणाली को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे विधानसभा की कार्यकुशलता बढ़ रही है और पारदर्शिता एवं जवाबदेही में भी सुधार हो रहे हैं। विधान सभा के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं, उनका समाधान आवश्यक है। विधेयक पर स्वस्थ चर्चा में कमी आ रही है, जो उचित नहीं है। तथ्यात्मक बहस होनी चाहिये। विधेयक पर अच्छी एवं स्वस्थ चर्चा के बाद ही कानून बनना चाहिये। इसके लिए विधायकों को अध्ययन एवं प्रशिक्षण पर ध्यान देना होगा। विधानसभा के कार्य दिवसों को बढ़ाना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके लिए सभी राजनीतिक दलों को गंभीर होना पड़ेगा तभी जनहित से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर सार्थक एवं पर्याप्त चर्चा संभव हो पाएगी। विधायकों की अलग–अलग विधारधारा का होना तो स्वाभाविक है परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इनमे दूरियाँ बढ़ने से सदन के वातावरण में थोड़ी खटास आ रही है जिससे सदन की कार्य क्षमता घटती है।

आजकल मीडिया भी अध्ययन एवं तैयारी के साथ बहस में भाग लेने वाले विधायकों को हेड लाइन में जगह नहीं देते हैं। सदन में हंगामा और अव्यवस्था करने वाले विधायक प्रेस में प्रमुखता प्राप्त करने से हमारी दिशा ही गलत हो रही है। सदन में अनुशासन एवं मर्यादा बनाये रखने के लिये अध्यक्षों को काफी मशक्कत करनी पड़ रही हैं। सभी राजनैतिक दलों को साथ बैठकर इसे ठीक करना होगा। विधायकों को भी समझना होगा कि इस प्रकार के आचरण से अन्तत: राजनीतिज्ञों के प्रति जनता के विश्वास में कमी आती है। कभी कभी राजनीतिक ध्रुवीकरण में होने वाले उतार–चढ़ाव से भी सदन की कार्य प्रणाली पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए विधानसभा अध्यक्ष और विधायकों को मिलकर प्रयास करना होगा। जन–संवाद एवं राजनीतिक शिष्टाचार को स्थापित करना होगा।

नि:सन्देह राजस्थान विधानसभा का इतिहास बड़ा गौरवशाली एवं गरिमामय रहा है। राजस्थान की विधानसभा के माननीय सदस्यों ने अनेक बार दलगत राजनीति से ऊपर उठकर प्रदेश के हित में क्रांतिकारी विधेयक पारित किये हैं। हमारे विधान सभा अध्यक्षों के साथ–साथ हमारे विधायकों की भूमिका भी बड़ी सराहनीय रही है। देश की अन्य अनेक विधानसभाओं की तुलना में राजस्थान विधानसभा की गौरवमय प्रजातान्त्रिक यात्रा के लिए हमारे विधायक बधाई के पात्र हैं। वर्तमान में जनता सक्रिय एवं जागरूक हैं और भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी मिलकर इस लोकतान्त्रिक मंदिर को और अधिक सशक्त, पारदर्शी एवं जनोन्मुखी बनायें। विधानसभा अध्यक्षों की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है और आगे भी रहेगी।

डॉ. कैलाश सोडाणी
कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।

राजस्थान की बावड़ियां - जल और विरासत की शाश्वत संरक्षक

अंजलिका पंवार

भजनलाल सरकार राज्य में जल संरक्षण की बेहतरी और संवर्द्धन के लिए लगातार काम कर रही है। इसी दिशा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विश्व पर्यावरण दिवस–2025 पर एक महत्वपूर्ण अभियान वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य लोगों में जल संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना, जलाशयों का जीर्णोद्धार करना और राजस्थान को जल आपूर्ति के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है। रेगिस्तान की धरती राजस्थान, पानी की हर बूंद को बचाने के तरीकों के लिए जानी जाती है। पानी की कमी से निपटने और ऐसी शुष्क जलवायु में जीवन को व्यवहार्य बनाने के लिए, राजस्थान के लोगों ने बावड़ियां बनाने की कला में महारत हासिल की, जिन्हें स्टेपवेल भी कहा जाता है।

बावड़ियां न केवल पानी के स्त्रोत हैं, बल्कि सामुदायिक जीवन का केंद्र भी हैं। पहले महिलाएँ यहाँ पानी लाने और सामाजिक मेलजोल बढ़ाने के लिए इकट्ठा होती थीं, ग्रामीण अपने मेहराबों के नीचे आराम करते थे और व्यापारी और यात्री अपनी प्यास बुझाने और स्थानीय लोगों से जुड़ने के लिए एक जगह ढूँढ़ते थे। इसके अतिरिक्त, ये संरचनाएँ राजस्थान की समृद्ध स्थापत्य विरासत को दर्शाती हैं। शासकों, व्यापारियों और ग्रामीणों द्वारा समान रूप से निर्मित, बावड़ियों को वर्षा जल को इकट्ठा करने और भविष्य में उपयोग के लिए कुशलतापूर्वक संग्रहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। प्रत्येक बावड़ी उस समय के इंजीनियरिंग कौशल और जल संरक्षण की सामाजिक और सामूहिक चेतना की गहरी समझ का प्रमाण है।

आज ये बावड़ियां स्थापत्य स्थलों, पर्यटकों के आकर्षण और भारत के अतीत की एक समृद्ध विरासत के रूप में काम करती हैं। वे दिखाती हैं कि कैसे मानव रचनात्मकता अभाव पर विजय प्राप्त कर सकती है और कुछ बेहद खूबसूरत और उद्देश्यपूर्ण बना सकता है। आइए, अब राजस्थान की कुछ प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण बावड़ियों पर एक नज़र डालते हैं। यहाँ राजस्थान की कुछ प्रसिद्ध बावड़ियां दी गई हैं, जिनमें से प्रत्येक अद्वितीय स्थापत्य शैली और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती हैं:

चाँद बावड़ी (आभानेरी, दौसा) :–भारत की सबसे प्रसिद्ध बावड़ियों में से एक, जिसका निर्माण 9वीं शताब्दी में हुआ था। इसमें 13 मंजिलों की गहराई तक 3,500 से अधिक सममित सीढ़ियाँ हैं – ज्यामिति और कलात्मकता का एक उल्लेखनीय कारनामा।

रानी जी की बावड़ी (बूंदी) :– रानी नाथावती जी द्वारा 1699 में निर्मित यह बावड़ी नक्काशीदार स्तंभों और मेहराबों से सुसज्जित है। यह बूंदी और उसके शासक वंश की समृद्ध स्थापत्य शैली को उजागर करती है।

तूर जी की झालरा (जोधपुर) :–ब्लू सिटी में एक मध्ययुगीन बावड़ी, तूर जी की झालरा 1740 के दशक की है। हाल ही में इसका आमूलचूल जीर्णोद्धार किया गया और यह पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान बन गया है।

पन्ना मीना का कुंड (आमेर, जयपुर) :–आमेर किले के पास यह आकर्षक बावड़ी 16वीं शताब्दी में बनाई गई थी। यह उपयोगिता और कलात्मकता का एक आदर्श मिश्रण है जिसमें सममित सीढ़ियाँ और एक शांतिपूर्ण माहौल है।

रत्नागढ़ की बावड़ी (चित्तौड़गढ़) :–यह बावड़ी चित्तौड़गढ़ किले के करीब स्थित है। यह एक सरल लेकिन सुरुचिपूर्ण शैली को दर्शाता है और इस क्षेत्र में जल संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

नाहरगढ़ की बावड़ी (जयपुर) :–नाहरगढ़ किले के भीतर स्थित यह बावड़ी सैनिकों और किले के अधिकारियों के लिए एक प्रमुख जल भंडारण संरचना थी। यह किलेबंद बस्तियों में जल संसाधनों की सावधानीपूर्वक योजना को उजागर करता है।

रानी की बावड़ी, पुष्कर :– पुष्कर में यह छोटी लेकिन सुंदर बावड़ी स्थानीय लोगों के लिए एक रानी द्वारा बनाई गई थी। यह उदारता और सामुदायिक कल्याण की देखभाल के प्रतीक के रूप में खड़ी है।

नवचोकिया बावड़ी (जोधपुर) :–पुराने शहर में स्थित यह छोटी लेकिन सुंदर बावड़ी मारवाड़ी स्थापत्य शैली और नाटकीय जलवायु में जल संरक्षण की समृद्ध परंपरा को दर्शाती है।

बड़ी बावड़ी (बीकानेर) :– बीकानेर की बड़ी बावड़ी थार रेगिस्तान में सामुदायिक जल भंडारण का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

डाबरी कुंड (जैसलमेर) :– जैसलमेर का डाबरी कुंड एक छोटी लेकिन अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई बावड़ी है जिसे थार की गहरी घाटियों में पानी की कमी से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

मोढेरा बावड़ी (अजमेर) :– अजमेर में कई छोटी बावड़ियां हैं। उनमें से सबसे प्रसिद्ध आना सागर के पास की बावड़ी है, जो मध्ययुगीन जल प्रबंधन तकनीकों को दर्शाती एक शांत जगह है।

मंडोर (जोधपुर) में बावड़ी :– मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडोर में यह बावड़ी, अपने नाटकीय, ऐतिहासिक परिवेश में मिश्रित वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है।

बाड़मेर में बावड़ी :–बाड़मेर क्षेत्र में कई छोटी बावड़ियां बंजर परिदृश्य में लोगों और उनके झुंडों दोनों के लिए पानी उपलब्ध कराती थीं। प्रत्येक बावड़ी जलवायु और संसाधनों के अनुकूल होने को दर्शाती है।

राजस्थान की बावड़ियां सिर्फ़ जल संग्रहण संरचनाएँ नहीं हैं, वे इस क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक बावड़ी अस्तित्व, रचनात्मकता और सांप्रदायिक एकता की कहानी बयां करती है।

अंजलिका पंवार,
सहायक जनसंपर्क अधिकारी,
शोध एवं संदर्भ शाखा,
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग,
जयपुर

जल है तो कल है : समय की पुकार है जल संरक्षण

अविनाश जोशी

जल हमारे अस्तित्व की नींव है। भारतीय संस्कृति में जल केवल भौतिक तत्व नहीं, अपितु एक जीवंत चेतना है–माँ गंगा, यमुना, सरस्वती के रूप में पूजित और जीवन का आधार। आज जब जल संकट एक वैश्विक आपदा का रूप लेता जा रहा है, तब जल संरक्षण केवल एक विचार नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जिम्मेदारी बन चुका है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही पंचतत्त्वों की उपासना की परंपरा रही है। जल उनमें प्रमुख है। वैदिक काल से ही जल संचयन की व्यवस्था, तालाबों, बावड़ियों, कुओं और झीलों के माध्यम से की जाती रही है। हमारे पुरखों ने प्राकृतिक संसाधनों के साथ सामंजस्य बिठाकर जीवन जिया, किंतु आज आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम इन परंपराओं से दूर हो गए हैं।

देश के अनेक हिस्सों में भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। कभी जल–संपन्न रहे गाँवों में अब पेयजल के लिए भी टैंकरों का सहारा लेना पड़ रहा है। शहरों में जल आपूर्ति पर बोझ बढ़ रहा है। इस स्थिति के पीछे हमारी लापरवाही, अनियंत्रित दोहन और जल संरक्षण के प्रति उदासीनता जिम्मेदार है।

जल संरक्षण की आवश्यकता अब केवल पर्यावरण की दृष्टि से नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी महसूस की जा रही है। कृषि, उद्योग, शहरी जीवन–हर क्षेत्र जल पर निर्भर है। इसलिए जल संरक्षण की दिशा में सार्वजनिक और व्यक्तिगत स्तर पर गंभीर प्रयास आवश्यक हैं।

वर्षा जल संचयन इस दिशा में एक प्रभावशाली उपाय है। घरों की छतों पर रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाकर हम वर्षा के पानी को उपयोगी बना सकते हैं। सामुदायिक जल संरक्षण योजनाएं, ग्रामीण तालाबों और झीलों का पुनरुद्धार, पारंपरिक जलस्त्रोतों की मरम्मत और जागरूकता अभियानों के माध्यम से हम व्यापक स्तर पर जल संकट से निपट सकते हैं।

हमें यह भी समझना होगा कि जल का अपव्यय केवल एक व्यक्ति की समस्या नहीं, यह पूरी मानवता का संकट है। हमारे दैनिक जीवन के छोटे–छोटे कदम–जैसे नल बंद रखना, गाड़ियों की धुलाई में बाल्टी का उपयोग, साफ–सफाई में पीने योग्य जल की जगह खारे या पुनर्निर्मित जल का प्रयोग–बड़ी मात्रा में जल की बचत कर सकते हैं।

भारतीय धार्मिक ग्रंथों में जल को जीवनदायिनी शक्ति कहा गया है। वरुण देव को जल के देवता के रूप में पूजा गया है। गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी नदियों को मोक्षदायिनी माना गया है। कुम्भ जैसे पर्वों में करोड़ों श्रद्धालु जल में डुबकी लगाकर आत्मशुद्धि करते हैं। यह सब दर्शाता है कि जल भारतीय जीवन दर्शन का एक अभिन्न अंग है। आज विश्वभर में जल संकट के प्रति चेतना जागृत हो रही है। अनेक देश जल संरक्षण के सख्त कानून बना रहे हैं। रेनवाटर हार्वेस्टिंग, वाटर रीसायकलिंग और ड्रिप इरिगेशन जैसी तकनीकों को प्रोत्साहन मिल रहा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जल संरक्षण को लेकर सहयोग और ज्ञान–साझा की दिशा में ठोस पहल हो रही है। भारत को भी इस दिशा में व्यापक, दीर्घकालिक और सशक्त रणनीति अपनानी होगी।

अंतत:, जल संरक्षण केवल नीतियों और कानूनों से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकों की सहभागिता से ही संभव है। हमें यह समझना होगा कि यदि हमने आज जल के महत्व को नहीं समझा, तो आने वाली पीढ़ियों को हम केवल संकट की विरासत सौंपेंगे। यह समय है चेतने का–क्योंकि जल है, तभी कल है।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 जून, 2025

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र दिन 3:17 तक, धृति योग दिन 1:17 तक, गर करण दिन 11:46 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–वृष, मंगल–सिंह, बुध–मिथुन, गुरू–मिथुन, शुक्र–मेष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 3:17 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 10:10 से आरम्भ होगी। आज सोम प्रदोष व्रत और मास शिवरात्रि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:20 तक, शुभ 9:03 से 10:46 तक, चर 2:11 से 3:54 तक, लाभ–अमृत 3:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि का भय है। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ बनी रहेगी।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।